आने वाला कल...

कड़ी संख्या 3

हर मोड़ पर टकराती एआई...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा

संकल्पना और समन्वय: बी. के. त्यागी

पात्र

कैप्टन श्रीकांत– करीब 24 वर्ष, फौज में कमांडो है

मेजर राम– करीब 45 वर्ष, आंतकवादी विरोधी गतिविधियों में माहिर

सुबेदार राघव– 48 वर्ष, कैप्टन श्रीकांत के साथ पोस्टिड

सिस्टर/नर्स

दृश्य 1

(बूटों की आवाज जैसे फौज के जवान पोजिशन ले रहें हों...)

दबी आवाज में– साहब आतंकवादी उस घर में छुपे हैं...

श्रीकांत – चलने की आवाज, फिर दबी आवाज में – सुबेदार राघव, क्या चल रहा है...

सुबेदार राघव– श्रीकांत साहब, ये तीन या चार आतंकवादी हैं, सामने घर से रुक रुककर फायर कर रहें हैं...पीछे की ओर मेजर राम भी हैं, आपका ही इंतजार था...

तभी तड़ातड़ गोलियों की आवाज...

कैप्टन श्रीकांत– थोड़ी ऊंची आवाज में– पीछे गोलियों की आवाज जारी है– घर में सिविलियन्स भी हैं क्या ?

सुबेदार राघव– हां सर, शायद चार या पांच घरवाले भी अंदर हैं...

श्रीकांत– ये ही तो परेशानी है...अंधेरे में तीर भी नहीं चला सकते हैं...**थोड़ा रुककर..** .जयहिंद सर...

मेजर राम– हां कैप्टन श्रीकांत...वैरी गुड...हां कहां है तुम्हारा मच्छर?

श्रीकांत– लाया हूं सर...**सूटकेस जमीन पर घिसने की आवाज...**सारे मच्छर इसी में हैं...

सुबेदर राघव– (अचानक गोलियां चलने लगती है) सर, उन्होंने फायर बढ़ा दी है...आप लोग मच्छर की बातें कर रहे हो...पहले इन मच्छरों को खत्म कर लेते हैं श्रीकांत जी...

राम– रिलैक्स राघव, हां, तो कैप्टन श्रीकांत पहला मच्छर भेजो...

श्रीकांत– लो सर, ये गया मच्छर – राघव जी ये आपकी एआई का ही कमाल है– **किसी मशीन के उड़ने जैसी आवाज...क्लिक की आवाज**–लो सर ईमेज आनी शुरू...

राघव– ओहो...ये आपका मच्छर छोटा–सा ड्रोन, एआई पर आधारित है...वाह सर और ये ब्रीफकेस में स्क्रीन पर सब आ रहा है, अरे ये रहे आतंकवादी...और...और...

श्रीकांत– **हां,** ये नीचे देखो...सर तीन होस्टेज हैं...

राम– टीम रेडी फॉर एक्शन...लोकेशन समझ लो...मेजर विपिन आप यहां से...हां अपनी टीम के साथ...और मैं सामने से...श्रीकांत तुम और राघव होस्टेज को सुरक्षित निकालोगे...हम कवरिंग फॉयर देंगे...जैसे ही होस्टेज बाहर आएंगे हम फाइनल अटैक करेंगे...क्लियर...

सब एकसाथ– यस सर...

(ताबड़तोड़ गोलियों की आवाज, लोगों के चिल्लाने की आवाज)

आवाजें– चलो आप लोग बाहर चलो...सर...अरे पीछे हट...हट...निकलो...– **तड़ातड़ गोलियों की आवाज– राघव चिल्लाता है–** श्रीकांत...श्रीकांत सर को गोली लग गई...

(ताबड़तोड़ गोलियों की आवाज, लोगों के चिल्लाने की आवाज और एक तेज धमाके के साथ एकदम से शांति...)

दृश्य परिवर्तन का संगीत

(ट्रे में कुछ सामान जैसे इंजेक्शन, शीशीयां आदि रखने की आवाजें...टक...टक... किसी के जाने की आवाज...)

राघव– श्रीकांत सर एक बात कहूं...

श्रीकांत– हां कहो राघव जी...

राघव– सर ये ऑपरेशन भी कामयाब रहा, हमेशा की तरह...आपकी एआई भी हमारे काम आई, हमेशा की तरह...और आप फिर घायल हो गए...हमेशा की तरह.. .

हंसी

श्रीकांत– और क्या राघव जी...सब प्रफैक्ट...

और तेज हंसी

तेजी से बूटो के चलने की आवाज...

राघव– जयहिंद सर...

श्रीकांत– जयहिंद सर...

मेजर राम– जयहिंद...लो कैप्टन श्रीकांत आपके लिए फूल और आपकी वजह से फिर मेजर राम को अस्पताल आने का मौका मिला...

हंसी

श्रीकांत– **राम** सर आप तो मेरा मजाक उड़ा रहे हैं...

राम– हां, कैप्टन श्रीकांत, मैं क्या अब तो पूरी युनिट कह रही है कि अगर कैप्टन श्रीकांत को इंजरी नहीं हुई तो मिशन खतरे में आ सकता है...

हंसी...

राम– हां भई और सभी कह रहे हैं कि कैप्टन श्रीकांत के मच्छर तो काम के हैं ही पर उनके आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बेस्ड उपकरण उनकी इंटेलिजेंस से बेहतर परफार्म कर रहे हैं...

और तेज हंसी...

राघव– हां सर आपने एआई की अच्छी बात छेड़ी...मैं तो पूछना चाह रहा था कि, श्रीकांत जी की ये आर्टिफिशिल इंटेलिजेंस तो अब हमारे सभी ऑपरेशन्स में दिख ही रही है...पर क्या हमारे रोजाना के जीवन में भी एआई की कुछ भूमिका है?

राम– ओहो, तुम दोनो का एआई पर डिस्कशन खत्म ही नहीं हुआ, मैने सोचा था कि दिल्ली के आर्मी अस्पताल में सब निपट गया होगा...पर अब कश्मीर के अस्पताल में भी ये चर्चा जारी रहेगी...तो चलो पहला सवाल मेरा...

श्रीकांत– आपका सवाल, पूछिए सर...

राम– तो कैप्टन श्रीकांत, ये इन मच्छरों में एआई की क्या भूमिका है...

राघव– वाह मेजर राम...मैं भी बस ये पूछने वाला था...इन ड्रोन्स में एक कैमरा ही तो होता है...फिर इसमें एआई की क्या जरूरत?

श्रीकांत– हंसते हुए– अरे नहीं...नहीं...इन मिनिएचर ड्रोन्स में सिर्फ कैमरा ही नहीं, बल्कि व्यक्ति को पहचानने की क्षमता भी होती है जैसे कौन हमला करने वाला है? कौन दोस्त है कौन दुश्मन...और कौन आंतकवादी है और कौन आम नागरिक...

राघव– हैं ये तक पहचान हो सकती है...एआई से?

श्रीकांत– हां...भई, अगर पुराना रिकार्ड हो तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से पहचान हो सकती है, पर अगर कोई रिकार्ड ना भी हो, तो भी ये एआई व्यक्ति के आक्रमक रवैये से भी उसे पहचानने में सक्षम है और इसी से हमलावर या आतंकी की पहचान कर लेती है...

राम– पर कैसे?

श्रीकांत– राम सर, इसी के लिए तो डाटा जमा किया जाता है...ये डाटा लाखों... करोड़ों लोगों का होता है, जिसमें उनकी भाव–भंगिमा, हाव–भाव आदि का डाटा होता है...बस हमारा मच्छर इसी से सब पता करता चलता है और हां, हमें चुपचाप आतंकियों की लोकेशन भी दे देता है...

राम– अच्छा...अं...श्रीकांत मैने सुना है कि हम रास्ता ढूंढने के लिए जो एप्प या सॉफ्टवेयर का उपयोग करतें हैं...वो सारा एआई पर ही आधारित है...

श्रीकांत– बिल्कुल सही कहा आपने मेजर राम, अब देखिए, आप कहीं जा रहे हैं, तो रास्ता जानने के लिए एप्प का उपयोग करते हैं और आपको रास्ता बताने वाला एप्प पहले तो आपसे ये पता करता है कि आप जा कैसे रहें हैं... पैदल, मैट्रो से, बस से, मोटरसाइकिल से या कार से...

राघव– हां, ये तो बताना होता है और मैडम भी कुछ ना पूछती रहती हैं...

राम– अरे राघव जी, आप ये भी चयन कर सकते हैं कि आपको मैडम या सर की आवाज सुननी है...जो आपको पसंद हो...

हल्की हंसी

श्रीकांत– हां, अब तो ये सुविधा भी है...हां, तो मैं कह रहा था कि आप कैसे यात्रा कर रहे हैं, इससे वो एप्प आपके लिए सबसे छोटा रास्ता ढूंढ कर बताता है और इसके लिए... क्या ये ऑफिस का टाइम है? क्या कोई एक्सीडेंट हुआ है? क्या कोई वीआईपी का मूवमेंट है? या कोई मेला लगा है...इस तरह के कई डाटा को वो देखता– समझता है और एक उपयुक्त निकालकर हमें सबसे जल्दी अपने गंतव्य पर पहुंचने में मदद करता है...

राघव– अरे श्रीकांत जी, एकबार तो मैडम ने मुझे रॉग साइड से छोटा रास्ता बता दिया था और वहां खड़े थे ट्रैफिक पुलिस वाले...मैडम ने चालान कटवा दिया था...

हंसी

राम– राघव जी वो तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है...यानी कृत्रिम...पर आपकी अक्ल तो असली है...उसका उपयोग भी कर लो...फिर कहोगे की एआई भरोसे लायक नहीं है...

श्रीकांत– वैसे सर आपने सही कहा, असल में जो डाटा हम दे रहें हैं, उसी के अनुसार एआई का दिमाग तैयार होता है, अब कई वाहन चालकों ने खासतौर से टैक्सी वालों ने ही ये शार्टकट ढूंढा था और उपयोग किया... अब जब चालान कटने शुरू हुए तो सब सही रास्तों पर चलने लगे और एप्प ने भी सही रास्ते बताने शुरू कर दिए...वैसे ये सॉफ्टवेयर हमेशा गलत साइड में जाने की मना ही करता है...

राघव– अच्छा श्रीकांत जी, ये एआई आधारित सॉफ्टवेयर जब राइड शेयर यानी दो या तीन अलग–अलग लोग मिलकर एक ही टैक्सी में जा सकते हैं, इसमें सभी ग्राहक एक ही दिशा में जा रहे हैं, इनका चयन भी ये एआई ही करती है?

श्रीकांत– हां, बिल्कुल ऐसा ही होता है, जिन लोगों को एक दिशा में यानी आसपास के इलाकों में जाना होता है, तो राइड शेयर उन्ही ग्राहकों का चयन करती है, जिससे समय, ईंधन दोनों बचता है...

राम– अच्छा श्रीकांत, ये जो हवाई जहाज ऑटो पायलट पर उड़ते हैं वो भी एआई के द्वारा ही होता है...

श्रीकांत– जी हां सर और हवाई जहाज क्या अब तो जो बिना ड्राइवर के गाड़ियां चल रही हैं, स्मार्ट ग्रिड, स्मार्ट रेड लाइट्स, स्मार्ट ट्रैफिक कंट्रोल जैसे जहां ट्रैफिक अधिक है वहां पहुंचने से पहले अन्य गाड़ियों को दूसरे रास्ते पर भेजना या जिन रास्तों पर ट्रैफिक ज्यादा जा रहा है, वहां रेड लाइट को लंबे समय तक हरा रखकर, अधिक से अधिक वाहनों को निकालना...

राघव– अच्छा श्रीकांत जी, फिर ये फोन...ईमेल आदि में भी ये एआई कुछ ना कुछ कर ही रही होगी...

श्रीकांत– जी राघव जी बिल्कुल...अच्छा हमारे ईमेल में जो स्पैम आते हैं, उन्हे भी अलग करने का कार्य एआई द्वारा ही होता है, अब गुगल ने तो नयान्नवे दशमलव नौ फीसदी स्पैम को रोकने में सफलता पा ली है...

राम– यार श्रीकांत, पिछली बार तो तुम्हारे अस्पताल में सिस्टर ने कॉफी भिजवाई थी, इसबार ऐसा कुछ नहीं...क्या बोलना पड़ेगा?

(कप प्लेट की आवाज...)

सिस्टर– नहीं सर, कुछ नहीं बोलना पड़ेगा...ये रही आपकी कॉफी और बिस्किट...और सर थोड़ा कैप्टन श्रीकांत को आराम भी करने दीजिए...अभी उन्हे आराम की आवश्यकता है...

राम– थैंक्स सिस्टर...बस कॉफी पीते ही हम निकल जाएंगे...

सिस्टर– थैंक्स सर...

– जाने की आवाज –

राघव– वाह सर, कॉफी तो आ गई, तो अब बातें भी जल्द खत्म करते हैं...तो मैं जल्दी से एक सवाल जो हमेशा पूछ ही लेता हूं...देखिए सर, ये एआई कुछ ज्यादा ही इंटेलिजेंट होती जा रही हैं...कभी पूरी मानवता पर ही हावी हो गई तो?

राम– हां, ये खतरा तो मुझे भी नजर आता है श्रीकांत...राघव जी ने ठीक कहा कि हर क्षेत्र जैसे परिवहन, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, सेवा क्षेत्र, मानव संसाधान और अब तो सुना है कि अध्यात्म के क्षेत्र में भी एआई की घुसपैठ हो ही गई है...अब एआई ही मानव को कंट्रोल करने लगे तो?

श्रीकांत– हंसते हुए– अरे सर, कई लोग इस तरह की बात करते हैं...चलिए आज थोड़ा आराम से इन बातों को समझते हैं...वैसे एक बात कहूं...ये आज की एआई एक मच्छर के दिमाग के बराबर भी इंटेलिजेंट नहीं है, तो मानव को कंट्रोल करना तो दूर की बात है...

राघव– क्या बात करते हो श्रीकांत सर, आपका मच्छर तो बड़ों बड़ों के दिमाग से तेज है...

हंसी

श्रीकांत– नहीं राघव जी ऐसा लगता है पर ऐसा है नहीं...असल में हॉलीवुड की कई सांइस फिक्शन फिल्मों जैसे टर्मिनेटर, आई रोबोट आदि ने ऐसा वहम बना दिया कि इतने इंटेलिजेंट रोबोट बस धरती पर आ ही गए...पर ऐसा है नहीं...

राम– पर श्रीकांत, लगता तो ऐसा है कि एआई ने बहुत तरक्की कर ली है...

श्रीकांत– हां तरक्की कर तो ली है...पर अभी भी मानव के बराबर पहुंचने के लिए लंबी दूरी तय करनी है। असल में आजकल के जो रोबोट्स हैं, वैज्ञानिकों का कहना है कि उनकी अक्ल एक मच्छर के बराबर भी अभी नहीं हुई है...

राघव– हैं, एक मच्छर के बराबर भी नहीं??? वो कैसे...

श्रीकांत– अब वैज्ञानिकों ने बड़े–बड़े रोबोट बनाए पर एक कमरे में घुसने और वहां रखी वस्तुएं पहचानने के लिए एक रोबोट को अरबों–खरबों कैलकुलेशन करने पड़ते हैं और उसमें भी कई बार गलती हो जाती है। तब वैज्ञानिकों ने सोचा सबसे सरल, बेहद सूक्ष्म और बहुत कम न्यूरॉन्स वाले मच्छर के दिमाग पर काम किया जाए और उन्होंने इंसैक्टॉयड्स या बगबॉट्स तैयार किए, फिर भी ये कमरे में एक मच्छर की उड़ान के आगे कुछ नहीं थे, जबकि अरबों कैल्कुलेशन करने में सक्षम थे...

राम– अच्छा...पर सुना है अब तो रोबोट में कोंशसनेस यानी चेतना जगाने की तैयारी है?

श्रीकांत– अरे नहीं सर कहां मानव का दिमाग और कहां रोबोट या कहे कहां एआई... एआई पर काम करने वालों ने कोंशसनेस यानी चेतना के चार स्तर बताएं हैं। पहला चेतना का स्तर है लेवल जीरो, दूसरा स्तर है लेवल एक, तीसरा स्तर है लेवल दो और चौथा स्तर है लेवल तीन...अब पहले स्तर यानी

लेवल जीरो में आते हैं वो जीवन रूप जो चल नहीं सकते जैसे पौधे...फिर दूसरे स्तर यानी लेवल एक में आते हैं कीट, सरीसृप आदि...

राघव– तो ये रोबोट कौन से लेवल में आते हैं...

श्रीकांत– **पहले** पूरा सुन लीजिए राघव जी, फिर खुद ही तय कर लीजिएगा...हां तो चेतना का तीसरा स्तर है लेवल दो और इसमें आते हैं बंदर, शेर और बाकी अन्य प्राणी...और चौथा चेतना का स्तर है लेवल तीन और इसमें आते हैं हम... यानी मानव...

राम– तो श्रीकांत...हम एआई पर आधारित रोबोट को किस लेवल की चेतना में सक्षम बना पाए हैं...

राघव– बस यही सवाल मैने पूछा था, सर...

श्रीकांत– अब देखिए क्योंकि रोबोट चलने–फिरने लगे तो लेवल जीरो से आगे निकल गए...वैज्ञानिकों ने रोबोट्स को चेतना के लेवल एक में डाला है यानी मच्छर के बराबर ही स्तर है, लेकिन ये भी गलत है, क्योंकि मच्छर चेतना के मामले में इन रोबोट्स से बहुत आगे है। अब खुद ही सोचिए ये रोबोट्स, ना तो छुपने के लिए जल्दी से कोई जगह ढूंढने में सक्षम है, ना अपने शिकार करने वालों को पहचान सकते हैं और ना ही उनसे बच सकते हैं, ना ही खाना ढूंढने या आवास ढूंढने की उनमें स्वतंत्र क्षमता है। तो इनकी चेतना की किसी सुस्त कीड़े के बराबर होने की तुलना की जा सकती है, मच्छर जैसे एक्टिव कीट से तो बिल्कुल नहीं...

राम– अच्छा अभी मानव से इतने पीछे हैं ये एआई आधारित रोबोट्स...आश्चर्य है...

श्रीकांत– और क्या सर, लेकिन हां जितनी तेजी से कार्य हो रहा है, हो सकता है कि कुछ दशकों में ये लेवल दो पर आ जाएं, जब इनमें अन्यों के अनुसार दुनियां का मॉडल बनाने की क्षमता आ जाएगी...और लेवल तीन यानी

मानव के स्तर तक आना अभी बहुत दूर है, कह सकते हैं कई दशक लग जाएंगे...अभी तो मौजूदा एआई को अरबों–खरबों डाटा भी पचाना है...

राघव– और कब तक ये डाटा पचा लेगी एआई...

श्रीकांत–हंसते हुए– अरे राघव जी ये तो निरंतर चलती प्रक्रिया है। लाखों साल पहले अपने दो पैरों पर पहली बार चलने वाले हमारे पूर्वजों ने विकास करते हुए आज मंगल की ओर कदम बढ़ा दिए हैं, तो ज्ञान अर्जित करने का काम तो हर समय चल ही रहा है और वैसे भी सभी एआई, रोबोट्स तो मानव की मदद के लिए हैं, हमारे जीवन को सुरक्षित, आरामदायक बनाने के लिए हैं...

राघव– अब देखिए श्रीकांत सर जिन्दगी आरामदायक तो आज भी है, लेकिन कुछ के लिए ये ही बोझ भी है....विज्ञान ने कितनी तरक्की कर ली...ये कह कर ईमेल आया कि चिट्ठी पहुंचने में देर लगती है, तार में भी देर लग जाती है, जबकि काम बहुत अर्जेंट होता है...तो तुरंत संदेश भेजो और पाओ... सारी टेंशन खत्म...

राम– हां वो तो है...फिर इसमें क्या बुरा है?

राघव– अरे राम सर, पहले कुछ दिनों में बॉस को मैसेज पहुंचता था, फिर कुछ दिनों में जवाब आता था...तबतक चैन की सांस...अब तो मैसेज भेजा और तुंरत जवाब और अगर मोबाइल मैसेजिंग में कुछ भेजा तो ये चिंता कि दोनो टिक नीले हुए की नहीं...हो गए तो अभी तक जवाब क्यों नहीं आया... मैं तो कहता हूं कि ये टेक्नोलॉजी ही बीपी बढ़ने का सबसे बड़ा कारण है...

जोर से हंसी

राम– वैसे राघव जी आप कह तो ठीक रहे हैं...और हमें अब सिस्टर के मैसेज का ख्याल रखना चाहिए...तो कैप्टन श्रीकांत, एआई के महत्व को मैं भी मानता हूं, फिर आऊंगा...अब जल्दी से ठीक हो जाओ...नया मिशन इंतजार में है...

राघव– अब कहां जाना है, सर...

राम– समय आने पर सब पता चल जाएगा राघव जी...तो श्रीकांत आराम करो और जल्दी ठीक हो जाओ...और हां एआई पर अभी तुमसे और बात करनी है...चलिए राघव जी...

श्रीकांत– जी सर, मुझे मिशन का इंतजार रहेगा और एआई पर बातचीत के लिए समय तो अगले मिशन के बाद ही मिल पाएगा...

राम– ऐसा क्यों कैप्टन श्रीकांत...

श्रीकांत– क्यों सर नया मिशन होगा, एआई का कुछ नया उपयोग होगा और फिर मैं भी तो कुछ नया घायल होउंगा...तभी तो मिशन सफल होगा...

तेज हंसी के साथ समापन

– समाप्त –